

विरुद्ध जनता को जागरूक करना था।

प्रश्न 6. फ्रांस की क्रांति ने यूरोपीय देशों को किस तरह प्रभावित किया?

उत्तर—फ्रांस की क्रांति ने यूरोपीय देशों को विभिन्न तरीके से प्रभावित किया है, जिनका उल्लेख निम्नलिखित है—

(i) इटली—इटली उस समय कई भागों में बँटा हुआ था। फ्रांस की इस क्रांति के बाद इटली के विभिन्न भागों में नेपोलियन ने अपनी सेना एकत्रित कर लड़ाई की तैयारी की और 'इटली राज्य स्थापित किया। एक साथ मिलकर युद्ध करने से उनमें राष्ट्रीयता की भावना आयी और इटली के भावी एकीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

(ii) जर्मनी पर प्रभाव—जर्मनी भी उस समय छोटे-छोटे 300 राज्यों में विभक्त था, जो नेपोलियन के प्रयास से 38 राज्यों में सीमित हो गया।

(iii) पोलैण्ड पर प्रभाव—नेपोलियन ने स्वतंत्रता की लहर फूँकी। पहले यह दास प्रथा और आस्ट्रिया के बीच बँटा हुआ था। यद्यपि पोलैण्ड को शीघ्र आजादी नहीं मिली, लेकिन इसी क्रांति ने ही उनमें राष्ट्रीयता की भावना का संचार किया।

(iv) इंग्लैण्ड पर प्रभाव—इस क्रांति का प्रभाव इंग्लैण्ड पर इतना अधिक पड़ा कि वहाँ की जनता भी सामंतवाद के विरुद्ध आवाज उठाने लगी। फलस्वरूप, सन् 1832 ई० में इंग्लैण्ड में 'संसदीय सुधार अधिनियम' पारित हुआ, जिसके द्वारा वहाँ के जमीन्दारों की शक्ति समाप्त कर दी गयी और जनता के लिए अनेक सुधारों का मार्ग प्रशस्त हो गया।

प्रश्न 7. 'फ्रांस की क्रांति एक युगान्तरकारी घटना थी, इस कथन की पुष्टि करें।

उत्तर—सन् 1789 की फ्रांसीसी क्रांति एक युगान्तरकारी घटना थी, क्योंकि इस क्रांति के फलस्वरूप एक युग का अन्त हुआ और नए युग के आगमन का मार्ग प्रशस्त हुआ। इस क्रांति ने फ्रांस में राजतंत्र समाप्त किया तथा प्रजातांत्रिक शासन की स्थापत्य कर दी। सामाजिक व्यवस्था में बदलाव और स्वतंत्रता, समानता एवं बन्धुत्व की भावना का विकास हुआ।

घटना थी।

प्रश्न 8. फ्रांस की क्रांति के लिए लुई XVI किस तरह उत्तरदायी था।

उत्तर—फ्रांस की क्रांति के लिए लुई XVI पूर्णतः उत्तरदायी था। वह सन् 1774 ई० में फ्रांस की गद्दी पर बैठा, जो अत्यधिक निरंकुश, फिजुलखर्च एवं अयोग्य था। वह विद्रोहियों को कुशलतापूर्वक दबाने का समर्थक था। उसका विवाह आस्ट्रिया की राजकुमारी मेरी अन्तोयनेत के साथ हुआ था। उसकी रानी भी फिजुलखर्च करती थी, तथा वह उत्सवों में काफी रूपये खर्च करती थी। वह अपने खास आदमियों को उच्च पद दिलाने के लिए राजकार्य में दखल देती रहती थी। राजा के वसाय स्थित महल में 15 हजार अधिकारी ऐसे थे जो कोई काम नहीं करते थे, मगर अपार धनराशि वेतन के रूप में लेते थे। अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में भी राजा ने ब्रिटेन के विरुद्ध अमेरिका की आर्थिक मदद की। इससे राज्य का खजाना खाली हो गया। फलतः राजा ने अपने नियमित खर्च के लिए जनता पर करों का बोझ बढ़ा दिया। लुई XVI की निरंकुशता चरम पर थी, क्योंकि उसका कहना था कि "मेरी इच्छा ही कानून है।" ऐसी स्थिति में राजा की आज्ञा का उल्लंघन करना अपराध था। इस प्रकार, लुई XVI की निरंकुशता, विलासिता, फिजुलखर्ची एवं स्वेच्छाचारिता फ्रांस की क्रांति का एक प्रमुख कारण था।

प्रश्न 9. फ्रांस की क्रांति में जैकोबिन दल की क्या भूमिका थी?

विरुद्ध जनता को जागरूक करना था।

प्रश्न 6. फ्रांस की क्रांति ने यूरोपीय देशों को किस तरह प्रभावित किया? (7)

उत्तर—फ्रांस की क्रांति ने यूरोपीय देशों को विभिन्न तरीके से प्रभावित किया है, जिनका उल्लेख निम्नलिखित है—

(i) इटली—इटली उस समय कई भागों में बँटा हुआ था। फ्रांस की इस क्रांति के बाद इटली के विभिन्न भागों में नेपोलियन ने अपनी सेना एकत्रित कर लड़ाई की तैयारी की और 'इटली राज्य स्थापित किया। एक साथ मिलकर युद्ध करने से उनमें राष्ट्रीयता की भावना आयी और इटली के भावी एकीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

(ii) जर्मनी पर प्रभाव—जर्मनी भी उस समय छोटे-छोटे 300 राज्यों में विभक्त था, जो नेपोलियन के प्रयास से 38 राज्यों में सीमित हो गया।

(iii) पोलैण्ड पर प्रभाव—नेपोलियन ने स्वतंत्रता की लहर फूँकी। पहले यह दास प्रथा और आस्ट्रिया के बीच बँटा हुआ था। यद्यपि पोलैण्ड को शीघ्र आजादी नहीं मिली, लेकिन इसी क्रांति ने ही उनमें राष्ट्रीयता की भावना का संचार किया।

(iv) इंग्लैण्ड पर प्रभाव—इस क्रांति का प्रभाव इंग्लैण्ड पर इतना अधिक पड़ा कि वहाँ की जनता भी सामंतवाद के विरुद्ध आवाज उठाने लगी। फलस्वरूप, सन् 1832 ई० में इंग्लैण्ड में 'संसदीय सुधार अधिनियम' पारित हुआ, जिसके द्वारा वहाँ के जमीन्दारों की शक्ति समाप्त कर दी गयी और जनता के लिए अनेक सुधारों का मार्ग प्रशस्त हो गया।

प्रश्न 7. 'फ्रांस की क्रांति एक युगान्तरकारी घटना थी, इस कथन की पुष्टि करें।

उत्तर—सन् 1789 की फ्रांसीसी क्रांति एक युगान्तरकारी घटना थी, क्योंकि इस क्रांति के फलस्वरूप एक युग का अन्त हुआ और नए युग के आगमन का मार्ग प्रशस्त हुआ। इस क्रांति ने फ्रांस में राजतंत्र समाप्त किया तथा प्रजातांत्रिक शासन की स्थापत्य कर दी। सामाजिक व्यवस्था में बदलाव और स्वतंत्रता, समानता एवं बन्धुत्व की भावना का विकास हुआ।

एक गणराज्य एवं सम्प्रभुत्व सम्पन्न राज्य है।

प्रश्न 2. भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख करें।

13

उत्तर—भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) लिखित एवं विज्ञान संविधान—भारतीय संविधान लिखित एवं विज्ञान का सबसे विज्ञान संविधान है। वर्तमान संविधान में 395 अनुच्छेद, 22 भाग एवं 12 अनुसूचियाँ हैं।

(ii) समाजवादी राज्य—भारतीय संविधान के 42वें संशोधन द्वारा भारत को समाजवादी राज्य घोषित किया गया। इसका उद्देश्य सम्पूर्ण समाज में आर्थिक, राजनीतिक और अधिकारिक दृष्टि से समानता स्थापित करना होता है।

(iii) धर्मनिरपेक्षता—धर्मनिरपेक्षता भारतीय संविधान की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। संविधान के 42वें संशोधन द्वारा भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित किया गया है। इसके अनुसार, राज्य की दृष्टि से सभी धर्म समान हैं और देश के किसी भी नागरिक के साथ धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता।

(iv) संसदीय शासन प्रणाली—संविधान द्वारा भारत में संसदीय शासन प्रणाली की स्थापना की गयी है। इस शासन प्रणाली के अन्तर्गत शासन की वास्तविक सत्ता मंत्रिपरिषद् में निहित होती है और मंत्रिपरिषद् व्यवस्थापिका के प्रति उत्तरदायी होती है। इस प्रणाली में संसद के सदस्य जनता के प्रतिनिधि होते हैं।

(v) स्वतंत्र न्यायपालिका—देश में एक स्वतंत्र न्यायपालिका भारतीय संविधान की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। इसका काम संविधान की रक्षा करना एवं नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करना है।

(vi) मौलिक अधिकार—भारतीय संविधान द्वारा नागरिकों को अनेक अधिकार दिए गए हैं, जिन्हें मौलिक अधिकार कहा जाता है। संविधान में मौलिक अधिकारों को हिफाजत की भी व्यवस्था की गयी है, नागरिकों के सर्वांगीण विकास के लिए ये अधिकार अति आवश्यक हैं।

(vii) लोकतांत्रिक गणराज्य—भारत में संविधान द्वारा एक लोकतंत्रात्मक गणराज्य की स्थापना की गयी है। लोकतंत्रात्मक व्यवस्था में जनता के प्रतिनिधि शासन करते हैं। भारत को एक गणराज्य घोषित किया गया है। गणराज्य का तात्पर्य यह है कि राज्य का प्रधान वंशानुगत न होकर जनता द्वारा निर्वाचित होता है।

प्रश्न 6. फ्रांस की क्रांति ने यूरोपीय देशों को किस तरह प्रभावित किया?

उत्तर—फ्रांस की क्रांति ने यूरोपीय देशों को विभिन्न तरीके से प्रभावित किया है, जिनका उल्लेख निम्नलिखित है—

(i) **इटली**—इटली उस समय कई भागों में बँटा हुआ था। फ्रांस की इस क्रांति के बाद इटली के विभिन्न भागों में नेपोलियन ने अपनी सेना एकत्रित कर लड़ाई की तैयारी की और 'इटली राज्य स्थापित किया। एक साथ मिलकर युद्ध करने से उनमें राष्ट्रीयता की भावना आयी और इटली के भावी एकीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

(ii) **जर्मनी पर प्रभाव**—जर्मनी भी उस समय छोटे-छोटे 300 राज्यों में विभक्त था, जो नेपोलियन के प्रयास से 38 राज्यों में सीमित हो गया।

(iii) **पोलैण्ड पर प्रभाव**—नेपोलियन ने स्वतंत्रता की लहर फूँकी। पहले यह दास प्रथा और आस्ट्रिया के बीच बँटा हुआ था। यद्यपि पोलैण्ड को शीघ्र आजादी नहीं मिली, लेकिन इसी क्रांति ने ही उनमें राष्ट्रीयता की भावना का संचार किया।

(iv) **इंग्लैण्ड पर प्रभाव**—इस क्रांति का प्रभाव इंग्लैण्ड पर इतना अधिक पड़ा कि वहाँ की जनता भी सामंतवाद के विरुद्ध आवाज उठाने लगी। फलस्वरूप, सन् 1832 ई० में इंग्लैण्ड में 'संसदीय सुधार अधिनियम' पारित हुआ, जिसके द्वारा वहाँ के जमीन्दारों की शक्ति समाप्त कर दी गयी और जनता के लिए अनेक सुधारों का मार्ग प्रशस्त हो गया।

व्याख्या कीजिए।

उत्तर—भारत में गरीबी उन्मूलन के लिए कई कार्यक्रम अपनाए गए हैं, जिनमें निम्नलिखित प्रमुख हैं :—

(i) **काम के बदले अनाज कार्यक्रम**—यह कार्यक्रम उन सभी ग्रामीण गरीबों के लिए है, जिन्हें मजदूरी पर रोजगार की आवश्यकता है। इस मद में केन्द्रीय सरकार द्वारा निःशुल्क खाद्यान्न उपलब्ध कराया जाता है।

(ii) **राज्य रोजगार गारंटी कोष**—इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अगर आवेदक को 15 दिनों के अन्दर रोजगार उपलब्ध नहीं कराया गया, तो उसे बेरोजगारी भत्ता दिया जाएगा।

(iii) **जवाहर रोजगार योजना**—इस योजना के अन्तर्गत सीमान्त किसान, कृषि श्रमिक आदि को उनके बेकार समय में पूरक रोजगार देने की व्यवस्था की गयी। इसके माध्यम से भूमिहीन परिवार के कम-से-कम एक सदस्य को 100 दिन का रोजगार मुहैया कराने की बात कही गयी।

(iv) **प्रधानमंत्री रोजगार योजना**—1993-94 में यह योजना शहरी क्षेत्र में बेरोजगार शिक्षित युवकों को स्वरोजगार मुहैया कराने के लिए प्रारम्भ की गयी थी। 1994-95 में इस योजना को ग्रामीण क्षेत्र के लिए विस्तारित किया गया।

(v) **समेकित ग्रामीण विकास कार्यक्रम**—गरीबी निवारण के लिए इस कार्यक्रम को 1980 से देश के सभी प्रखण्डों में लागू किया गया। यह एक स्वरोजगार कार्यक्रम है जिसमें गाँवों के गरीबों को उत्पादक परिसम्पत्ति देकर उनकी आय में वृद्धि की जाती है ताकि वे अतिरिक्त आय अर्जित कर गरीबी रेखा से ऊपर उठ सकें।

अतः, यहाँ यह पैमाने या गरीबी सूचक है।

प्रश्न 3. भारत में अपनाए गए गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—भारत में गरीबी उन्मूलन के लिए कई कार्यक्रम अपनाए गए हैं, जिनमें निम्नलिखित प्रमुख हैं।

(i) काम के बदले भोजन कार्यक्रम—यह कार्यक्रम उन सभी इलाकों के लिए है, जिनमें भोजन की आवश्यकता है। इस पर संघीय सरकार द्वारा निःशुल्क खाद्यान्न उपलब्ध कराया जाता है।

(ii) राज्य रोजगार गारंटी योजना—इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अगर कोई व्यक्ति 15 दिनों के अन्दर रोजगार उपलब्ध नहीं कराया गया, तो उसे भत्ता दिया जाएगा।

(iii) जवाहर रोजगार योजना—इस योजना के अन्तर्गत शोकांत किसान, कृषि क्षमिक आदि को उनके खेता समय में मुक्त रोजगार देने की व्यवस्था की गयी। इसके माध्यम से भूमिहीन परिवारों के कम-से-कम एक सदस्य को 100 दिन का रोजगार मुहैया कराने की बात कही गयी।

(iv) प्रधानमंत्री रोजगार योजना—1991-94 में यह योजना राष्ट्रीय क्षेत्र में रोजगार निर्मित युवकों को स्वरोजगार मुहैया कराने के लिए प्रारम्भ की गयी थी। 1994-95 में इस योजना को राष्ट्रीय क्षेत्र के लिए विस्तारित किया गया।

(v) समेकित राष्ट्रीय विकास कार्यक्रम—गरीबी निवारण के लिए इस कार्यक्रम को 1980 से देश के सभी प्रखण्डों में लागू किया गया। यह एक स्वरोजगार कार्यक्रम है जिसमें गरीबों को गरीबों को उत्पन्न कर परिश्रमों से रोजगार देने की योजना में मदद की जाती है ताकि वे आर्थिक रूप से आगे बढ़ सकें।

प्रश्न 4. भारत में गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों की कठिनाई बताइए।

उत्तर—भारत में गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों की कठिनाई में मुख्य रूप से यह है कि सरकार इसके लिए कार्यक्रम तो बना लेती है, लेकिन उसके अधिकारी उसे उचित तरीके से कार्यान्वित नहीं कर पाते। विकास कार्यक्रम की रणनीति बिना काम किए ही लेख हो जाती है, लेकिन अधिकारी निष्क्रियता बने रहते हैं। राज्य सरकारों में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा अव्यवस्था तथा उपयोग के कारण इन कार्यक्रमों के लिए प्राप्त राशि का उचित उपयोग नहीं हो पाता है। इसके अलावा भारत को किसी राज्य को केन्द्र सरकार से आवंटित राशि प्राप्त करने में कठिनाई होती है। साथ ही आवंटित राशि का निष्पक्षित कार्यक्रमों के लिए प्रयोग नहीं होता है। अतः भारत में गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम सफल नहीं हो पाता।

प्रश्न 5. बिहार में राष्ट्रीय गरीबी को मुख्य कारण क्यों-ये हैं? इस समस्या के समाधान के लिए उपाय बताइए।

उत्तर—बिहार में राष्ट्रीय गरीबी को मुख्य कारण है, जिनमें निम्नलिखित प्रमुख हैं—

(i) जनसंख्या में वृद्धि—बिहार में तेजी से बढ़ती जनसंख्या राष्ट्रीय गरीबी का एक प्रमुख कारण है। जनसंख्या की अधिकता के कारण यहाँ के लोगों की जीवन-स्तर में संतोषजनक सुधार नहीं हो पाता।

(ii) बाढ़ की समस्या—बिहार में बाढ़ हर साल आती है, जिससे फसल, घर, मवेशी आदि की क्षति होती है। बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में रोजगार कम हो जाता है। इससे गरीबी रेंज के ऊपर वाले लोग भी गरीबी रेंज के नीचे चले जाते हैं।

रूपरेखा स्पष्ट की गयी है। साथ ही यह एक गणराज्य एवं सम्प्रभुत्व सम्पन्न राज्य है।

प्रश्न 2. भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख करें।

उत्तर—भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) **लिखित एवं विशाल संविधान**—भारतीय संविधान लिखित एवं विश्व का सबसे विशाल संविधान है। वर्तमान संविधान में 395 अनुच्छेद, 22 भाग एवं 12 अनुसूचियाँ हैं।

(ii) **समाजवादी राज्य**—भारतीय संविधान के 42वें संशोधन द्वारा भारत को समाजवादी राज्य घोषित किया गया। इसका उद्देश्य सम्पूर्ण समाज में आर्थिक, राजनीतिक और आधिकारिक दृष्टि से समानता स्थापित करना होता है।

(iii) **धर्मनिरपेक्षता**—धर्मनिरपेक्षता भारतीय संविधान की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। संविधान के 42वें संशोधन द्वारा भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित किया गया है। इसके अनुसार, राज्य की दृष्टि से सभी धर्म समान हैं और देश के किसी भी नागरिक के साथ धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता।

(iv) **संसदीय शासन प्रणाली**—संविधान द्वारा भारत में संसदीय शासन प्रणाली की स्थापना की गयी है। इस शासन प्रणाली के अन्तर्गत शासन की वास्तविक सत्ता मंत्रिपरिषद् में निहित होती है और मंत्रिपरिषद् व्यवस्थापिका के प्रति उत्तरदायी होती है। इस प्रणाली में संसद के सदस्य जनता के प्रतिनिधि होते हैं।

(v) **स्वतंत्र न्यायपालिका**—देश में एक स्वतंत्र न्यायपालिका भारतीय संविधान की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। इसका काम संविधान की रक्षा करना एवं नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करना है।

(vi) **मौलिक अधिकार**—भारतीय संविधान द्वारा नागरिकों को अनेक अधिकार दिए गए हैं, जिन्हें मौलिक अधिकार कहा जाता है। संविधान में मौलिक अधिकारों की हिफाजत की भी व्यवस्था की गयी है, नागरिकों के सर्वांगीण विकास के लिए ये अधिकार अति आवश्यक हैं।

(vii) **लोकतांत्रिक गणराज्य**—भारत में संविधान द्वारा एक लोकतन्त्रात्मक गणराज्य की स्थापना की गयी है। लोकतन्त्रात्मक व्यवस्था में जनता के प्रतिनिधि शासन करते हैं। भारत को एक गणराज्य घोषित किया गया है। गणराज्य का तात्पर्य यह है कि राज्य का प्रधान वंशानुगत न होकर जनता द्वारा निर्वाचित होता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(27)

प्रश्न 1. भारत की जनसंख्या वृद्धि की विशेषताओं को बतावें।

उत्तर—भारत की जनसंख्या वृद्धि की विशेषताओं पर गौर करने पर यह स्पष्ट होता है कि वर्ष-प्रतिवर्ष भारत की जनसंख्या वृद्धि की ओर अग्रसर रही है। 1951 ई० से 1981 ई० तक जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि नियमित रूप से बढ़ रही थी। जहाँ 1951 ई० में जनसंख्या 361 लाख थी, वहीं 1981 में भारत की जनसंख्या 68 करोड़ से ऊपर पहुँच गयी। जनसंख्या वृद्धि की दर 1951 ई० में 1.25%, 1961 में 1.96%, 1971 ई० तक 2.20% तथा 1981 ई० तक 2.22% थी। लेकिन सरकार के प्रयास से जनसंख्या की वृद्धि दर में कमी आयी। सन् 1981 में वृद्धि दर घटकर 1991 ई० में 2.14% तथा 2001 ई० में 1.93% पर आ गयी।

जनसंख्या में वृद्धि दर घटने के बावजूद भी जनसंख्या में वृद्धि जारी रही। जो संख्या 1981 ई० में 68 करोड़ के लगभग थी, वह 1991 ई० में बढ़कर 84 करोड़ तथा 2001 ई० में 103 करोड़ के लगभग हो गयी। इस प्रकार 2011 ई० की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या बढ़कर 121 करोड़ से ऊपर पहुँच गयी। अतः, कहा जा सकता है कि भारत की जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि जारी है।

प्रश्न 2. भारत के विषम जनसंख्या घनत्व का वर्णन करें।

उत्तर—जनसंख्या घनत्व का तात्पर्य भूमि के प्रति इकाई पर अधिवासित होने वाली जनसंख्या है। भारत की जनगणना 2001 ई० के अनुसार, भारत का औसत जनसंख्या-घनत्व 325 व्यक्ति प्रति वर्ग कि०मी० है, लेकिन इसमें भारत में विषमता है। भारत की जनसंख्या समान रूप से नहीं बसी हुई है। कहीं घनी आबादी है और कहीं कम आबादी है। मैदानी राज्यों में सर्वाधिक घनत्व है, तराई राज्यों में भी काफी घनत्व है, लेकिन पर्वतीय राज्यों में घनत्व कम पाये जाते हैं। पठारी राज्यों में सामान्य घनत्व की स्थिति है।

भारतीय राज्यों में सर्वाधिक घनत्व पश्चिम बंगाल का है। यहाँ औसत प्रतिवर्ग किलोमीटर 904 व्यक्ति रहते हैं। उसके बाद क्रमशः बिहार तथा कोरल का स्थान है, जहाँ का औसत घनत्व क्रमशः 881 तथा 819 व्यक्ति प्रति वर्ग कि०मी० है। सबसे कम घनत्व अरुणाचल प्रदेश का है,

प्रत्येक दस वर्षों के अन्तराल पर का जाता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(27)

प्रश्न 1. भारत की जनसंख्या वृद्धि की विशेषताओं की बतावें।

उत्तर—भारत की जनसंख्या वृद्धि की विशेषताओं पर गौर करने पर यह स्पष्ट होता है कि वर्ष-प्रतिवर्ष भारत की जनसंख्या वृद्धि की ओर अग्रसर रही है। 1951 ई० से 1981 ई० तक जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि नियमित रूप से बढ़ रही थी। जहाँ 1951 ई० में जनसंख्या 361 लाख थी, वहीं 1981 में भारत की जनसंख्या 68 करोड़ से ऊपर पहुँच गयी। जनसंख्या वृद्धि की दर 1951 ई० में 1.25%, 1961 में 1.96%, 1971 ई० तक 2.20% तथा 1981 ई० तक 2.22% थी। लेकिन सरकार के प्रयास से जनसंख्या की वृद्धि दर में कमी आयी। सन् 1981 में वृद्धि दर घटकर 1991 ई० में 2.14% तथा 2001 ई० में 1.93% पर आ गयी।

जनसंख्या में वृद्धि दर घटने के बावजूद भी जनसंख्या में वृद्धि जारी रही। जो संख्या 1981 ई० में 68 करोड़ के लगभग थी, वह 1991 ई० में बढ़कर 84 करोड़ तथा 2001 ई० में 103 करोड़ के लगभग हो गयी। इस प्रकार 2011 ई० की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या बढ़कर 121 करोड़ से ऊपर पहुँच गयी। अतः, कहा जा सकता है कि भारत की जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि जारी है।